हिंदी सूफी काव्यों में साधना का स्वरुप

Dr. Ranjith. M, Asst. Professor, Dept of Hindi ,MES Asmabi College Kodungallur

इस्लाम धर्म के अंतर्गत उद्भूत आत्म चिंता एवं अनुभूति प्रधान विशिष्ट दार्शनिक मतवाद सूफीमत कहलाता है .इस मत के दर्शन तसवूफ्फ़ नाम से जाने जाते है .कुरान और हदीस के कुछ श्लोकों को जोड़कर इसका निर्माण हुआ है.हज़रत मुहमद के बाद इस्लाम धर्म में हुए हिंसा,विद्वेष तथा धर्म के बाह्याडम्बर ने इस्लाम के इस उदारचेता स्न्यासिओं की श्रंखला को जन्म दिया .इस्लाम धर्म के हिस्से के रूप में विकसित यह मत सभी दर्शनों के श्रेष्ठ तत्वों को स्वायत करके इस्लाम को अन्य धर्मों से अविरोधी बनाने की कोशिश की .

भारत में इस्लाम धर्म का प्रवेश सन ७२२ ई में हो चुका था . वे दक्षिण में व्यापार केलिए और उत्तर में शासन केलिए आये थे .ईरान और अरब देशों के राजनीतिक उथल पुथल के कारण सूफी संतों की जड़ें हिलने लगी तो वे भी भारत की और आये .भारत में आये सूफी साधक भारतीय दर्शन से भी कुछ अपनाकर तस्वुफ्फ़ को प्रभावपूर्ण बनाया .

सूफी धर्म प्रचार केलिए तत्कालीन साहित्यकारों ने अपना हाथ बंटाया है .आराध्य और आराधक के बीच प्रेम का मनोरम दृश्य उपस्थित करके मुल्ला दाऊद ने चंदायन ,शेख कूतूबन ने मृगावती ,मालिक मुहमद जायसी ने पद्मावत की रचना की . मसनवी शैली का पालन करते हुए परमात्मा का नमन,पैगम्बर का स्मरण ,साम्प्रदायिक राजा का नमन और मूल कथा इस क्रम में अवधि भाषा में हिन्दू -मुस्लिम विचारधाराओं के मिश्रण करके उन्होंने रचनाएं की . परमात्मा से मिलने तडपने वाले जीवात्मा का वर्णन , उत्तर भारत के सूफी कवियों नें भारतीय कहानियां और लोक कहानियों के माद्ध्यम से और दक्षिण के सूफी साहित्यकारों ने फारस की कहानियों पर नया रंग चढ़ा कर किया है .

भारतीय विचार धरा के अनुसार उपासना के दो रूप है -सगुणोपासना और निर्गुणोपासना .भगवद गीता में उसे व्यक्तोपासना और अव्यक्तोपास्ना के नाम से चित्रित किया है .निर्गुनोपासक वे है जो परमात्मा की उपासना अव्यक्त ,अचल और भूतात्मा के भाव से करते है .भारतीय सूफी कवियों ने भारतीय निर्गुण साधना पद्धति के साथ प्रेम तत्व का सम्मिश्रण करके रचनाएं की . निर्गुण ब्रह्म का रूप जायसी ने इस प्रकार किया -

अलख अरूप अबरन सों करता .वह बस सौ सब हो ही सों बरता
परगट गुप्त सों सरब व्यापी .धर्मी चीन्ह चीन्ह नहीं पापी

सूफी साधकों के मार्ग में चार स्थितियां है -

१.शरीयत (इश्वर की सता से प्रभावित होना)
२.तरीकत (विवेक प्राप्ति)
३. हकीकत (विश्व की वास्तविकता को पहचानना
४.) मारिफत (इश्वर को सत्य स्वरुप में जानना)

शरीयत कर्मकांड का क्षेत्र है .नमाज़ ,ज़कात ,उपवास ,हज आदि करके साधक (मोमिन) तरीकत के क्षेत्र में पहुंचते है .यह एक रहस्यमय रास्ता है,इसलिए इसे साधना खंड कहते है .इस क्षेत्र को पार करने केलिए गुरु की आवश्यकता है .तीसरे क्षेत्र में साधक परमात्मा के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करता है .चौधे क्षेत्र में साधक और परमात्मा के बीच का अंतर समाप्त हो जाता है .इस अवस्था में

पहुँच कर आत्मा फना हो जाती है और फिर उसे बका की अवस्था मालूम होने लगता है कि मै परमात्मा हूँ .आध्यात्मिक यात्रा करनेवाला सूफी (सालिक) को परमात्मा का ज्ञान (मारिफ) प्राप्त होता है .आत्मा और परमात्मा का लय हो जाता है .इसे अवस्था को फना कहा जाता है .यहाँ से भी आगे चलने पर आत्मा परमात्मा में वास करने लगती है .यही बका की अवस्था है.

सूफियों की साधना वस्तुतः इश्क की साधना है .मारिफत के भावावेग्मय रूप का ही नाम प्रेम है । प्रेम ह्रदय में अग्नि के समान है । समस्त विश्व उसी प्रेम का परिणाम है । सृष्टि के कण कण में व्याप्त इसी सौन्दर्य विभूति में सूफी स्वयं को न्योझावर कर देता है । सूफी परमात्मा को प्रियतमा कह कर पुकारते है और उसके इश्क में पागल बने घुमते है । जब प्रियतमा के अलावा उन्हें और कुछ भी नहीं दिखाई देता ,वे अपने प्रियतमा में सर्वस्व समर्पित कर तल्लीन हो जाते है ,तब उन्हें शाश्वत का आननद (बका) मिल जाता है .

मंझन ने मधुमालती में इस का वर्णन किया है –

"दूसर न कजहू तुव जोरा .दर्पण सिस्टी रूप मुख तोरा
और मैं तुई एक सरीरा.दुई माती सानी एक नीरा
एक बारी दुई वही पनारी .एक दिया दुई घर उजियारी
एक जीउ दुई घर स्न्चारा .एक अग्निदुयी घर उजियारी
एक जिउ दुई घर स्न्चारा .एक अग्नि दुई ठाएँ बारा "

इश्क हकीकी `से इश्क मजाजी तक पहुंचने की कहानी सूफी काव्यों में दिखाया गया है .इश्क हकीकी परमात्मा का प्रेम है और इश्क मजाजी सांसारिक जीवधारियों एवं वस्तुओं के प्रति आकर्षण . सूफी कवियों ने सांसारिक सौन्दर्य का बाह्य प्रेम आतंरिक प्रेम में परिवर्तित होने की सुंदर वर्णन किया है .चित्रावली में उस्मान ने लिखा –

आदि प्रेम बिधि ने उपराजा
प्रेमही लागी जगत सब साजा
आप रूप देखि सुख पावा
अपने हिये प्रेम उपजावा

प्रेम को इश्वर प्राप्ति के एकमात्र साधन मानने के कारण ही सूफी काव्य प्रेमगाधाओं के रूप में उपलब्ध है .यह प्रेम निस्वार्थ है .सूफी कवियों ने ईश्वर को स्त्री के रूप में माना है .अतः साधक उस स्त्री की प्रसन्नता के लिए कई प्रयत्न करता है.अनेक कष्टों को झेलने के बाद उनको मिलता भी है .

गुरु का भारतीय जीवन पद्धति महत्वपूर्ण स्थान है। न केवल शिक्षा अपितु समाज जीवन के हर क्षेत्र में गुरु की आवश्यकता बताई गयी है। मां अपने बच्चों की प्रथम गुरु कही जाती है। क्योंकि वही उन्हें चलनाए बोलना और किस से क्या व्यवहार करनाए यह बताती है। बालिकाओं को मां और बालकों को प्रायः पिता भावी जीवन के लिए तैयार करते हैं। इसलिए बच्चे का पहला विद्यालय उसका घर हैए यह कहा जाता है।इस चिंता का असर हिंदी सूफी काव्यों में पढ़ना तो आम बात ही है .परमात्मा के प्रति जानकारी ओर वहां तक जाने की रास्ते की जानकारी सिर्फ गुरु को है.इसलिए ही सूफी रचनाओं में पीर को प्रमुख स्थान मिला है . माया के बंधन से उसको बचाता है.आत्मा –परमात्मा के मिल्न में माया बाधक है .सूफी काव्यों में माया को शैतान के रूप में चित्रित किया है . पद्मावत के हीरामन तोता रत्नसेन को हमेशा सही रास्ता दिखाता रहता है ष्राघवचेतन हमेशा रत्नसेन को साधना के पथ से विचलित करते रहते है .

सूफीवाद का स्न्देश है सबसे प्रेम करो। दूसरों की भलाई अपनी भलाई समझो । समस्त जगत का आधार प्रेम है । प्रेम पानेवाला परमानंद के बारे में समझेगा ।

निष्कर्ष

निश्चित देश ,काल तथा धर्म का सहारा लेकर एक निश्चित जाती द्वारा प्रसारित होने के कारण सूफी धर्म ने मुस्लिम रहस्यवाद का नाम अवश्य पाया ,लेकिन इसमें जो भावना व्याप्त हो रही है वह किसी एक देश ,एक स्थान,एक धर्म और एक जाती से सम्बन्ध नहीं रखतीष सूफी कवियों की

रचनाओं में रहस्यवाद की बड़ी सुन्दर तथा सरल व्याख्यान हुयी है .हृदय की मधुर भावनाओं को जागृत करके अर्थात लौकिक प्रेम के ज़रिये अलौकिक प्रेम का वर्णन करते हुए उन्होंने साधना का अनोखा रूप प्रस्तुत किया । सहज और सरल साधना ,प्रकृति के प्रति रागात्मक वर्णन आदि सूफी साधना की विशेषताएं है ।

क्तण ्‌दरपजीण डए ोजण च्तवमिवतए क्मचज वभ्पिदकप एडै ोउंइप ब्वससमहम ज्ञवकनदहंससनत

सहायक ग्रन्थ

1.संत और सूफी साहित्य ,परशुराम चतुर्वेदी ,नगरी प्रचारणी सभा

2.इस्लामी अध्यात्म सूफीवाद जफर राजा ,लोकभारती प्रकाशन २००४

3.मध्यकालीन महाकाव्य व्यतिरेकी विश्लेषण ,डॉ लाल प्रसाद सक्सेना ,वाणी प्रकाशन ,१९७४